REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 6 | MARCH - 2018

पत्रकारिता और समाज

Rupam Kumari[1] and Dr. Bina Pathak[2]
[1]Research Scholar , Hindi Department, Ranchi University, Ranchi.
[2]Assistant Professor , Hindi Department , Ranchi University, Ranchi.

प्रस्तावना :-

समय और समाज के संदर्भ में सजग रहकर नागरिकों में दायिव बोध कराने की कला को पत्रकारिता कहते है। गीता में जगह–जगह पर शुभदृष्टि का प्रयोग है यह शुभदृष्टि ही पत्रकारिता है, जिसमे गुणों को परखना तथा मंगलकारी तत्वों को प्रकाश में लाना सम्मिलित है। गॉधी जी तो इसके समदृष्टि को महत्व देते थे। समाज हित में सम्यक प्रकाश को पत्रकारिता कहा जा सकता है। असत्य अशिव और असुन्दरम् सत्यम् शिवम् सुन्दरम की शंखध्वनि ही पत्रकारिता है।समाचार पत्रो की विविध व्यख्याओं द्वारा अनेक कर्तव्यों का बोध हो जाता है। उज्जवल सामाजिक चेतना के निर्माण की दिशा, पत्रों से प्राप्त होती है। साथ ही अन्याय को मिटाने, आदर्शो को फैलाने और व्यक्तिगत जीवन को सुखमय बनाने का मंत्र समाचार पत्र देते है। राष्ट्र की उन्नति तथा अवनति इनके उपर ही निर्भर है।यदि हमे लोकतंत्र को मजबूत बनाना है तो समाजिकी समस्याओं का हल करना प्रस्तुत करने से ही समाचार पत्र की उपदेयता सिद्ध हो जाती है। छोटे–छोटे समाचार पत्र सीमित साधन होते हुए भी साहस, दुरदर्शिता तथा लोकहित को ध्यान में रखकर लोकप्रिय हो जाते है। जनहित मे लिखने के कारण कभी – कभी मुकदमेबाजों मे फंसकर पत्रो को आर्थिक क्षति उठानी पड़ती है।महात्मा गॉधी द्वारा सम्पादित प्रकाशित हरिजन को लघु समाचार पत्र कहा जाता है। उसने जन जागृति एवं आदर्श समाज रचना संबंधी जो कार्य किया वह आज भी अनुकरणीय है।

आज का समाचार पत्र जन वर्ग का माता, पिता, स्कूल, कॉलेज, शिक्षक, थियेटर आदर्श, उदाहरण, परामर्श दाता और साथी हो गया है। समाचार पत्र परवाह नही करता है कि वह कौन धर्म का नियामक है।समाचार पत्र सामाजिक सुचनाओं का वाहक नही अपितु यह भावनाओ और विचारो की अभिव्यक्ति का साधन है।

कविफैज ने कहा है:–
फजां मेरे दर्द को जो जुबां मिले।
मुझे मेरा नामो निशा मिलें।।
वास्तव में समाज के सुख दुःख का स्वाद देने वाला सामाचार –पत्र ही है।

पत्रकारिता और समाज का गहरा नाता है। यह संबंध आज से नही वरन् सदियों से चला आ रहा है। पत्रकारिता अपने प्रारंभिक काल से ही समाज के सुधार व संस्कार का बीडा उठाया और इस लक्ष्य को प्राप्त भी किया। यदि पत्रकारिता के इतिहास पर एक नजर डाले तो दिखता है कि तत्कालीन पत्रकार पहले समाज सुधारक थे और समाज सुधार के लिए पत्र पत्रिका को ही हथियार बनाया।रूढियॉं, अॅंधविश्वासों, अशिक्षा अज्ञान कुसंस्कार के घेरे मे फॅसे भारतीय को समाज सुधारक प्रगति व विकास के नए पथ पर अग्रसर करना चाहते थे।

सती प्रथा, बाल विवाह आदि कुरीतियों ने समाज में जडें जमा रखी थी।समाज सुधारको ने पत्रकारो के रूप में इस कर्तव्य को पहचाना कि जब तक समाजिक बुराईयां दूर नही होगी तब तक न तो आार्थिक शोषण थमेशा न ही स्वतंत्रता मिल पायेगी।

राजा राममोहन राय जैसे कई समाज सुधारको को परम्परावादी समाज का विरोध झेलना पड़ा कितने ही महापुरूषो को समाज से अलग कर दिया गया। विधवा विवाह कराने वाले महापुरूष प्रश्नो के जाल मे फंस गए। अनमेल तथा बहुविवाह प्रथा के खिलाफ बोलने वाले पत्रकारो का रूढिवादी समाज ने बहिष्कार भी किया किंतु कहा जाता है कि अच्छाई की सदा जीत होती हैं और हमारे रूढिवादी समाज मे भी इन पत्रकारो की जीत हुई। अतः पत्रकारो की इस पीढी ने मेहनत लगन और निष्ठा के बल पर समाज की कुरितियों को मिटाकर ही दम लिया।

पत्रकारिता का उदेश्य प्रकट करते हुए हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी ने कहा था।पत्रकारिता का पहला उद्देश्य जनता की इच्छाओ और विचारों को समझना तथा उन्हे व्यक्त करना है, दूसरा उदेश्य जनता में वांछनीय भावनाओ को जाग्रत करना तथा तीसरा उदेश्य सार्वजनिक दोषो की निर्भीकता पूर्वक दूर करना है।

किसी भी समाज की तत्कालीन दशा का जायजा लेना है तो उस समय में प्रकाशित होने वाली पत्र–पत्रिकाओं को देखे क्योकि वे समाज विशेष का दर्पण होती है। पत्रकारिता का समाज में एक विशेष स्थान था, है और रहेगा।स्वतंत्रता संग्राम के समय ही पत्र को जनता तक सरकार के काले कारनामे को पहुँचाते थे देश भर में चल रही राजनीतिक गतिविधि की जानकारी देते थे। जनमत का प्रतिनिधित्व करते थे, तथा देश विदेश की रोचक व ज्ञानवर्धक समग्री से उनका मनोरंजन करते थे। इन सबका माध्यम पत्रकारिता था जिसे हमारा समाज थोडा सा शुल्क देखकर इस पुरस्कार को प्राप्त किया।जनता ने निःसंदेह पत्रो का अभिनंदन किया सरकारी दमन चक्र तथा बहुत सारी बाधाएँ के बावजदू भी आज मानव जीवन का अहम् हिस्सा बन गया। लोग सुबह उठते ही सबसे पहले समाचार पत्रो पर नजर अवश्य दौड़ाते हैं। शिक्षित व जागरूक समाज समाचार पत्रो को एक विश्वासनीय साथी मानते हैं।पत्रकारिता समाज के सामने सार्थक व कल्याणकारी सामग्री प्रस्तुत करती है। समाज के जिज्ञासा प्रवृति को संतुष्ट करने के लिए नयी – नयी बातों की जानकारी देने के अलावा घटनाओं व तथ्यो का विश्लेषण भी करती हैं।पत्रकारिता में समाज को प्रभावित करने की शक्ति विशेष रूप से पायी जाती है। अतः पत्रकारिता समाजिक जनमत को भी प्रतिबिंबित करती हैं। वह विचारो के आदान प्रदान का एक सशक्त माध्यम बनती है। यदि कोई समाचार कानून दृष्टि से अनुचित होने पर भी सामाजिक नियमों के विरूद्ध हो तो समाज उस पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता हैं और इन विचारो को पत्रकारिता ही फैलाता है। समाज केवल जनहीत ही नही चाहता बल्कि ऐसे पापियों, भ्रष्टाचारियों तथा बुरे लोगो को भी दंडित करना चाहता है जो कानूनी अथवा नैतिक दुष्टि से दोषी है।ऐसी स्थिति में पत्रकारिता खबर देने के अलावा उन व्यक्तियो के जीवन की गुप्त घटनाएँ भी प्रकाशित करती है ताकि उन व्यक्तियो को सजा मिल सके।कई बार पत्रकारिता की समाजिक सोंच व संस्कार बदलने के लिए लगातार एक मुहिम चलानी पड़ती है। पत्रकार को अपनी पूर्ण निष्ठा व कर्तव्य का पालन करते हुए समाज पर पैनी निगाह रखता है और एक कुशल अन्वेषक की तरह कार्य करता है।पत्रकारिता का समाज के प्रति बहुत बड़ा दायित्व बनता है। किसी भी पत्र के संपादक को यह भूलना नही चाहिए पाठक उसके पत्र से क्या अपेक्षा रखते है।

पत्र एक मायने में समाज का पथ प्रदर्शक है, क्योंकि पत्रकारिता को समाज के प्रति उचित दिशा निर्देश देने का दायित्व निभाने के अलावे और भी अनेक दायित्व निभाने पड़ते है। पत्रकार का समाजिक सरोकार किसी क्षेत्र विशेष तक सीमित नही है। उसे सभी आयु वर्ग की महिलाओं पुरूषो वृद्धो, वृद्धाओ वे बालक, बालिकाओ का हित चिंतन साधना पड़ता है। नारी जीवन से जुडी अनेक विसंगति थी और समस्याए अन्याय का विरोध सत्य की प्रतिष्ठा उपयोगी सामग्री व ज्ञान विज्ञान की जानकारी आदि द्वारा पत्रकार समाज से जुड़ा रहता है।आज जब समाज का प्रत्येक वर्ग अपनी ही स्वार्थ साधना मेंतल्लीन है तो ऐसी परिस्थिति में भी पत्रकारिता का सुधड़ सत्य न्यायपूर्ण व सुन्दर रूप गठने में जुडी है। समाज व पत्रकारिता का यह शाश्वत सम्बन्ध ही किसी देश में जनजागरण का परिचय होता है।वही समाज सुखी है जिसके नैतिक गुणों को अपने जीवन में आत्मसात कर लिया है। वही समाज सुखी हैं जहां प्रत्येक व्यक्ति परस्पर सम्मान की भावना रखता हैं। समाजवाद, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व की स्थापना करता है। वह शोषणमुक्त समाज की रचना करके समाज की प्रचलित दासतां असहिष्णुता को दूर करता है। संचार समाजीकरण का महत्वपूर्ण माध्यम है। समाजिकरण की सभी स्थितियो में पत्रकारिता की अपनी अहम भूमिका होती है। मानव समाजिक प्राणी तब बनता जब पत्रकारिता के

माध्यम से सांस्कृतिक मूल्यों और व्यवहारो को सीखता है। मौखिक संचार में बालक परिवार और दूरदर्शन के सहारे मानव समाज विस्तृत होता है। वह पूरे विश्व की क्रियाओ में सहभाही होता है। पत्रकारिता परम्परागत मान्यता को पुष्टि करता है। तथा सामाजिक गतिविधियों समाजिक नियंत्रण का साधन है। वह समाज का शिक्षक है तो समाजिक परिदृश्य को बदलता है। पत्रकारिता समाज पर पैनी दृष्टि रखता है। वह नई सूचनाओं से व्यक्ति और समाज की मानसिक क्षमता को विस्तृत बनाना उनकी कामना को स्वस्थ्य रखना उनकी रूचियों समाजहित में निर्मित करनाः– ये सब सामाचार पत्र से सुलभ है। जाग्रत जनमत समाचार पत्र के साधन मनोंरजन और विकास के संदेश देकर समाज का नव निर्माण करते है। प्रेम सोहर्द्ध सद्भाव सहयोगी द्धारा पत्रकारिता शोषण मुक्त आदर्श समाज की संरचना में अपना योगदान देते है। समाचार साधनो का बाहुतयता समाजीकरण की गति को तीव्र करता है। समाजिक विकास का सुत्रधार पत्र पत्रिकाएँ ही हैं।

पत्र जन सामान्य के शिक्षक तथा उत्प्रेरक है साथ ही शासकीय नीतियो और कार्यक्रमों के महानिरीक्षक है। इन पदो की गरिमा का अनुरूप यदि पत्र सदाचारण करे अपने उत्तरदायित्व बोध का निर्वाह करे तो जन सम्पर्क को स्वस्थ दिशा प्राप्त हो यकती है। पत्र पत्रिकाएँ जन मानव पर कई सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक प्रभाव से सुपरिचित होकर समाज को स्वस्थ दिशा प्रदान करते है।समाज निर्माण मे महिलाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और निभाती रहेगी। आज वह कौन सा क्षेत्र है। जहॉ नारी कार्यरत नही है। आकाश की उचॉइयों में प्रगतियो पर फैला नारी आश्चर्यजनक उड़ान भरने लगी है। हमे उस पर गर्व हैं।

जयशंकर प्रसाद के अनुसारः– नारी की करूणा अर्न्तजगत का उच्चतम विकास है। पूरी समस्या को सदा नये नजरिये से देखती है जो आधी दुनिया को अखबार की ताजगी और दृष्टि देती है।

सामाचार पत्रो का किसी देश की उन्नती में विशेष स्थान होता है। समाचार पत्रो के द्धारा ही राष्ट्र की आवाज गूंजती है किसी देश की जनता के विचार देश विदेश में ज्ञात होते है। वर्तमान प्रजातांत्रिक युग में लोकमत के निर्माण करने में और उसे प्रकट करने में पत्रकारिता के प्रमुख साधन है। पत्रकारिता जनता और शासन का पथ प्रर्दशन करती है। पत्रकारिता शाशणनिती के आलोचना करके उसे जागरूक रखती है परन्तु ये साधन प्रजातंत्र को उस समय ही सफल बना सकती है जब कि ये साधन सत्यता और निष्पक्षता से काम करे।वेसे तो प्रेस की एक अपनी शक्ति है, जिसे न तो जनता चुनकर किसी अधिकरण के रूप में संगठितकरती है और न सरकार से उसे अपने अपने अधिकरण के रूप में नियुक्त करती है यह उन बौद्धिक लोगो का संगठन है जो मानव कल्यान की प्रेरणा से प्रेरित होकर समाचार पत्र प्रकाशित करते है।

पत्रकारिता समाज का एक ऐसा दर्पण है। जिसमें समाज में घटित समस्याओं को देख जा सकता है। यदि यह धूमिल हो जाय तो इसे संरक्षित रखने की जिम्मेवाारी केवल इससे जुडे लोगो का नहीं है। बलिक समाज के सभी लोगो का है। एक पत्रकार आज हम किसी व्यक्ति कें जुवॉ से यह सुनते है कि पत्रकारिता बिक चुकी है तो बड़ी दुःख होता है। क्योकि जिस चीज की निर्माण किसी के हित के लिए हुआ था वह आज अपना स्वार्थ को पुरा करने में लगा हुआ है चाहे वह दूसरों के लिए अहित ही क्यों न हो।आज आवश्यकता है इस चौथे स्तम्भ को इन वायरस से बचानेतथा इसके तीन स्तम्भ न्यायपालिका, कार्यपालिका और व्यवस्थापिका के बीच सामंजस्य बनाये रखने की।

संदर्भ ग्रंथ

1. भारतीय पत्रकारिता और प्रश्न
   लेखक –कृष्ण बिहारी मिश्र
2. जनसंचार माध्यम
   लेखक –डॉ० बालन्दु शेखर तिवारी
3. हिन्दी पत्रकारिता और सवांद और विमर्श पृथ्वी
   कैलाश नाथ पाण्डेय

Rupam Kumari
Research Scholar , Hindi Department, Ranchi University, Ranchi.